शताब्दी के सर्वोच्च आचार्य और कवि थे रेवा प्रसाद

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी के मूर्धन्य संस्कृत विद्वान महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी की स्मृति में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने गुरुवार को आनलाइन श्रद्धांजलि सभा की। इसमें पूरे देश से संस्कृत के विद्वान सम्मिलित हुए। सबने आचार्य के संस्कृत साहित्य में अवदान को अतुल्य मानते हुए उन्हें शताब्दी का सर्वोच्च आचार्य और कवि बताया।

अकादमी के सचिव डाक्टर श्रीनिवास राव ने संस्कृत भाषा में आचार्य द्विवेदी का विस्तृत परिचय देते हुए कहा कि वे सच्चे अर्थों में महामनीषी थे। उन्होंने तीन महाकाव्य, 20 खंडकाव्य, दो नाटक, पांच मौलिक शास्त्रीय ग्रंथों की रचना की। साथ ही महाकवि कालिदास के काव्यों, भोजराज के श्रृंगारप्रकाश, और भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का संपादन किया।

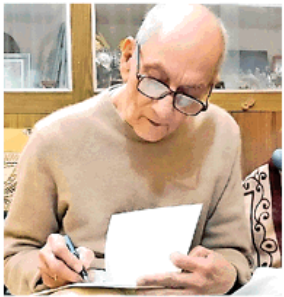

पं. रेवा प्रसाद द्विवेदी (फाइल फोटो)

श्रद्धांजलि

- साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने दी आनलाइन श्रद्धांजलि
- जुटे देश भर के विद्वान, अतुल्य बताया संस्कृत में अवदान

अकादमी के संस्कृत सलाहकार राजेंद्र मिश्र ने कहा कि संस्कृत सौंदर्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र, कविता, आलोचना, समीक्षा, अनुवाद, संपादन के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी शताब्दी के सर्वोच्च आचार्य और महाकवि थे। प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी ने उन्हें भारत रत्न देने की मांग की। बिलासपुर से प्रो.पुष्पा दीक्षित ने कहा कि संस्कृत शास्त्रों का संरक्षण विद्यार्थियों को तैयार करने से होगा। आधुनिक शिक्षा पद्धति से नहीं।

प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य द्विवेदी जितने शास्त्र के विषय में पक्के थे, उतने व्यवहार में सहृदय। प्रयागराज से प्रोफेसर हरदत्त शर्मा ने बताया कि आचार्य ने अमेरिका के टावर ध्वंस, बामियान में तालिबानों द्वारा बुद्ध मूर्ति ध्वंस पर, नेल्सन मंडेला की मुक्ति पर भी कविता लिखी थी। अहमदाबाद से प्रो. गौतम पटेल ने उन्हें संस्कृत विद्या का भीष्म पितामह बताया। कहा कि सनातन के नाम से लिखते हुए वे आज अपने कृतित्व से सनातन हो गए। उड़ीसा से प्रो. दीपक कुमार शर्मा उनको संस्कृत साहित्य में युगस्रष्टा कहा। सभा में आचार्य के ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर सर्वज्ञ द्विवेदी ने अमेरिका में अपने औषधि विषयक उच्च शोधों के पीछे पिता के वचनों की प्रेरणा बताई। कनिष्ठ पुत्र प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने उनके 40 ग्रंथों के संपादन की परंपरा को बनाए रखने, उनके महाकाव्य स्वतंत्र्यसंभव के बचे 35 सर्गों के प्रकाशन तथा भोजराज के श्रृंगारप्रकाश के अनुवाद को पूरा करने का संकल्प जताया। दक्षिण भारत से प्रो. सी राजेंद्रन ने कहा कि सनातन कवि अपने काव्यमय शरीर से हमेशा अमर रहेंगे। संचालन साहित्य अकादमी के डा. सुरेश बाबू ने किया।

प्रो. रेवा प्रसाद के स्वर्गवास पर ऑनलाइन शोक सभा आयोजित

नई दिल्ली, 27 मई (बलविंदर सिंह सोढी): साहित्य अकादमी ने प्रसिद्ध संस्कृत के लेखक प्रो. रेवा प्रसाद के स्वर्गवास पर ऑनलाइन शोक सभा आयोजित की। अकादमी के सचिव श्री निवास राव ने श्रद्धांजलि देते हुए कहाकि वह एक व्यक्ति नहीं बल्कि संस्था थे। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार, के.के. बिरला फाऊंडेशन पुरस्कार के अलावा अनेक पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं और उनके चले जाने पर जो कमी हुई है, उसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता। इस श्रद्धांजलि शोक सभा में अभिराज, राजेन्द्र मिश्रा, राधा वल्लभ त्रिपाठी, पुष्पा दीक्षित, कमलेश दत्त, राजेनंदन, गौतम भाई पटेल, दीपक कुमार शर्मा, हरदत्त शर्मा व अन्य कई विद्वान उपस्थित थे। अंत में अकादमी के उपसचिव सुरेश बाबू ने सबका धन्यवाद किया।

ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਲੇਖਕ ਪ੍ਰੋ. ਰੇਵਾ ਪ੍ਰਸਾਦ ਪ੍ਰਤੀ ਕੀਤੀ ਸ਼ੋਕ ਸਭਾ

ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ, 27 ਮਈ (ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸੋਢੀ)-ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਨੇ ਉੱਘੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਲੇਖਕ ਪ੍ਰੋ. ਰੇਵਾ ਪ੍ਰਸਾਦ ਦੇ ਅਕਾਲ ਚਲਾਣੇ 'ਤੇ ਆਨਲਾਈਨ ਸ਼ੋਕ ਸਭਾ ਕੀਤੀ। ਅਕਾਦਮੀ ਦੇ ਸਕੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਨਿਵਾਸ ਰਾਓ ਨੇ ਸਰਧਾਂਜਲੀ ਦਿੰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਸੰਸਥਾ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਪੁਰਸਕਾਰ, ਭਾਰਤੀ ਭਾਸ਼ਾ ਪ੍ਰੀਸ਼ਦ ਪੁਰਸਕਾਰ, ਕੇ.ਕੇ. ਬਿਰਲਾ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ ਪੁਰਸਕਾਰ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅਨੇਕਾਂ ਪੁਰਸਕਾਰ ਤੇ ਸਨਮਾਨ ਮਿਲ ਚੁੱਕੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਚਲੇ ਜਾਣ 'ਤੇ ਜੋ ਘਾਟਾ ਪਿਆ ਹੈ ਉਹ ਕਦੇ ਪੂਰਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਸ਼ੋਕ ਸਭਾ ਵਿਚ ਅਭਿਰਾਜ ਰਾਜੇਂਦਰ ਮਿਸ਼ਰਾ, ਰਾਧਾ ਵੱਲਭ ਤ੍ਰਿਪਾਠੀ, ਪੁਸ਼ਪਾ ਦੀਕਸ਼ਤ, ਕਮਲੇਸ਼ ਦੱਤ, ਰਾਜੇਨੰਦਨ, ਗੌਤਮ ਭਾਈ ਪਟੇਲ, ਦੀਪਕ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ, ਹਰਦੱਤ ਸ਼ਰਮਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਈ ਵਿਦਵਾਨ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਏ। ਅਖ਼ੀਰ ਵਿਚ ਅਕਾਦਮੀ ਦੇ ਉਪ ਸਕੱਤਰ ਸੁਰੇਸ਼ ਬਾਬੂ ਨੇ ਸਭ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ।

ਅਜੀਤ ®©
28-May-2021
Page: 7
http://epaper.ajitjalandhar.com/edition/20210528/22/7.cm

साहित्य अकादेमी ने प्रो.द्विवेदी को श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी ने गुरूवार को प्रख्यात संस्कृत लेखक प्रोफेसर रेवा प्रसाद द्विवेदी के निधन पर एक ऑनलाइन शोक सभा का आयोजन किया। अकादेमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी कोई व्यक्तिगत संगठन नहीं थे वे एक साहित्यिक सिद्धांतकार थे, उनकी कविता दिल की भावनाओं को छूती थी। सबसे महत्वपूर्ण बात हालांकि वे एक शिक्षाविद थे, उनका रचनात्मक लेखन,विशेष रूप से कविता और नाटक आम जनता के लिए था। इसलिए उन्होंने लोक मुहावरों की भाषा में लिखा और उनके दुखों, सुखों, इच्छाओं और आकांक्षाओं की बात की। सीता करितम उनकी उत्कृष्ट कृति मानी जाती है जो एक महाकाव्य है कालिदास की कृतियों का उनका संपादन भारतीय साहित्य में एक प्रमुख योगदान माना जाता है भारतीय साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार भारती भाषा परिषद पुरस्कार केके बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार सहित कई सम्मान मिले।